International Journal of Advanced Research and Development
ISSN: 2455-4030
Impact Factor: RJIF 5.24
www.advancedjournal.com
Volume 3; Issue 6; November 2018; Page No. 14-16

मुक्तिबोध के काव्य में मानवीय संवेदना

डॉ संतोष रामचंद्र आडे
संत रामदास महाविद्यालय, घनसावंगी, जालना, महाराष्ट, भारत।

प्रस्तावना

मुक्तिबोध वेदना से प्रेरित और परिचित कवि है सामान्य जन के प्रति मन में आस्था भी है। उनका उद्देश्य वर्तमान समय की जनता को शोषण मुक्त करना था। वेदना के जितने भी चित्रण मिलते हैं, उसका चित्रण उन्होंने अपने काव्य में किया है। कभी समाज में धार्मिक राजनीति पूंजीवादी धन के रूप में शोषण होता है। इसका अंकन अपने काव्य में मुक्तिबोध ने किया है। शोषण का भयावह और घिनौना रूप अपने काव्य के माध्यम से उजागर करने की कोशिश की है। इनके काव्य का प्रमुख उद्देश्य मध्यवर्ग की समस्याओं को लेकर चिंतित रहा है। वे कहते है –

याद रखो मुक्ति कभी अकेले में नहीं मिलती,
यदि वह मिलती है तो सब के साथ।
जनमानस लोगों में चेतना सिल बंद कर उन्हे संघर्ष के लिए प्रेरित करते रहे तथा उनके साहित्य का उद्देश्य शोषण मुक्त समाज बनाना रहा है।

पूंजीपतियों का निषेध (पूंजीवादी समाज के प्रति)

जन सामान्य के प्रति घन आस्था उनके दिल में रही है। इन गरीब जनता का होता हुआ शोषण देखकर वह तिलमिला उठते हैं। इसलिए यह कहते हैं की वर्तमान काल का असली रूप जान लेना अवश्य है। इनके मन में संस्कृति0 के प्रति आस्था है। इसलिए वे पूंजीवादी का द्वेश करते हैं। उनको उसका क्रोध आता है, वह कहते हैं कि इसके रक्त में कहीं सत्य नहीं है। केवल अवरोधन इन पंछियों को देख कर उन से तीव्र घ्रना आने लगती है इन कन–कन में कृमि रोग बसा है। यह रोग फैल रहा है और इसका सर्वनाश हम सब को करना होगा। इस प्रकार कभी अपने अंतर्मन से कठोर प्रहार करने की निरंतर कोशिश करता है। यह कहते हुए मुक्तिबोध संपूर्ण समाज को ललकार रहे हैं।

मेरी ज्वाला जिनकी ज्वाला होकर एक,
अपनी उस नेता से धो चले विवेक,
तू है मरण तू है रिक्त तू है व्यर्थ,
था तेरा ध्वंस केवल एक तेरा अर्थ।

इसलिए वे कहते हैं कि समूचा जन्म एकत्रित होकर इन मुट्ठी भर पूँजीवादियों के खिलाफ संघर्ष करने से मुक्ति मिल जाएगी। उनके मन में गरिब–पीड़ितों का दुख देख कर ज्वाला उठा रही है। जो ज्वाला जनता के मन में है। वह एक होकर इसकी उष्णता सारे संसार में फैली हुई और विविधता को धो डालें क्योंकि पूँजीवादी सभ्यता के कारण आम जनता का सर्वनाश हो गया है। उनका जीवन जीना दुश्वार हो गया। इसलिए भी उसे खत्म करने के लिए प्रेरित करते हैं

सोच को की प्रति (लकड़ी का रावण)

मुक्तिबोध ने वर्तमान समय में पूँजीवादी समाज किस तरह से गरीब जनसामान्य जनता का शोषण कर रहा है। उसका पर्दाफाश करना चाहते हैं। यह पूँजीपति लोग और सामान्य कि कभी एकता उभरने नहीं देते। जब तक इन में एकता नहीं होगी तब तक इनका स्वार्थ जलता रहेगा। यह रावण असत्य दमन का प्रतीक रूप में आया है। पूंजीवादी की गहरी मानसिकता बनी हुई है, की जन सामान्य में एकता नहीं हो सकती। इसलिए भी इन लोगों की सचित को मजाक कर भूल रहे हैं। अपनी अंहम्भावना का उनको पूरा घर बता रहे है। अपने आपको उनका शोषण कर जीवन की कृति के क्रम समझते थे। गरीब सामान्य जनता में इन्होंने ही फासला बनाया है। यह गरीब जनता के होने नहीं देती। इसलिए मुक्तिबोध उन गरीबों को एकत्रित करना चाहते हैं। उनमें उन पूँजीपतियों के खिलाफ हार की ज्वाला जलाना चाहते हैं। वर्तमान में अमीर और गरीब की दूरी खत्म हो जाए। क्योंकि आज हम देखते हैं की गरीब, गरीब होते जा रहा है और अमीर, अमीर बनते जा रहा है। कवि अपने शब्दों में कहते हैं–

क्या है !! यह मेरी ही गहरी और उसास में,
कौन सा है नया भाव,
क्रमशः
कुहरे की लहरीली सलवटे,
मुड़ रही जुड़ रही,
आपस में गूंथ रही !!

सत्य बोध की प्रतीति (भूल गलती)

भूल गलती कविता में कवि मुक्तिबोध कहना चाहते हैं, की इन चालाक राजनेता का संबंध आम जनता के प्रति है इनका संबंध जनसामान्य का घर उजाड़ने और सच्चाई की आंख में धूल झोकना तथा हमें वे बेसिर परे करते हैं लेकिन उस चालाक नेता के रूप की हमें आत्मप्रतीति होती है। जब हमारा सत्य बोध उठता है। तो हम उससे डरते नहीं। हमारी चेतना भरी आंखों के सामने करने का साहस उस बादशाह में नहीं रहना था।

इस अवस्था अपनी हद छोड़ने पर हम ताकत जुटा कर जागृति का भाव निर्माण होने लगता है। आत्मा बल लेकर वह इस व्यवस्था का पर्दाफाश बनाने के लिए बाहर निकलता है। आज राजनीति में जैसे ही चुनाव आते हैं, तो राजनीतिक दलों के लोग आम जनता को सिर्फ विश्वास दिला पाते हैं। काम कुछ भी नहीं हो पाता है। इस विश्वास को मुक्तिबोध अपनी कविता में पर्दाफाश करने की कोशिश करता है। यह राजनीतिक लोग एक जोक की तरह आम जनता के शरीर का खून चूसते हुए नजर आते हैं। वे अपने काव्य में कहते हैं–

इतने में, हमी में से
अजीब कराह–सा कोई निकल भागा,
भरे दरबार–में आम में भी
संभल जाएगा!!

मुक्तिबोध बताना चाहता है कि किसी भी व्यवस्था का अतिरेक ही उसके सर्वनाश का कारण बनता है और यह कारण हमारी एकता में छिपा हुआ है। इसलिए जनता को एक होकर इस राजनीतिक पूँजीपतियों को ललकारना होगा। उनके खिलाफ ज्वाला भरना हीं होगा यही मुक्तिबोध चाहते हैं।

कसकते दुखों की अनुभूति (मुझे कदम कदम पर)

आज वर्तमान में होने वाले समाज का शोषण कवि मुक्तिबोध अपने कार्य में कदम–कदम पर इस कविता में करता है। मुक्तिबोध ने अपने काव्य में समाज में होने वाले शोषण का सच्चा चित्रण किया है। इनके साथ ही वह उन पीड़ित जिंदगीयों का चित्रण करता है। जो जिंदगी इस शोषण से बेहाल है, इन्हें दो समय का खाना भी नसीब नहीं होता। आज ऐसी जिंदगीयाँ है जो पेट के लिए जल रही है।

कवि अपने अनुभव को कदम–कदम पर व्यक्त करता है। मुक्तिबोध अपनी आत्मप्रतीति के लिए जब बाहर निकलते हैं तो उन्हें चारों और दुःख भरी जिंदगीयॉ दिखती है। वे उन सब पर से गुजर कर इनका चित्रण अपने काव्य में करना चाहते हैं। इन समस्याओं के साथ मिलकर रहना चाहते हैं। आम जनता की समस्याओं को वह अपनी समस्या समझते हैं। वे अपने शब्दों में कहते हैं–

मुझे भ्रम होता है कि प्रत्येक पत्थर में ये चमकता हीरा है।
हर व्यक्ति में आत्मा अधीरा है ।
प्रत्येक सुष्मती में विमल सदनीरा है,
मुझे भ्रम होता है कि प्रतीक वाणी में
महाकाव्य पीड़ा है।

कवि मुक्तिबोध को हर पत्थर में उन्हें चमकता हुआ हीरा दिखता है। हर छाती में आत्मा अधीरा दिखता है हर सुष्मती में विमल सदानीरा है। हर एक में इतने दर्द है कि उसकी अभिव्यक्ति करे तो महाकाव्य बनता है। दूर जगह–जगह कवि को दुखों की अनुभूति मिलती है वह जहां भी जाते हैं तो उन्हें शोषित जनता का भयावह रूप ही दिखाई देता है। सर्व सामान्य जनता को किस प्रकार इन पूंजीपतियों ने ग्रस्त किया है। यह कवि बताना चाहता है। जगह पर रुक कर अगर देखें तो उपन्यास मिल जाते हैं।

शोषितों के प्रतिनिधि के रूप में (मैं तुम लोगों से दूर हूँ)

कवि मुक्तिबोध समाज के करुणा में चित्र को प्रस्तुत करना चाहता है। कवि को उन लोगों के प्रति आस्था है, दया का भाव है। सर्वहरा वर्ग का शोषण हो रहा है, लेकिन कभी उन शोषको से अपने आप को दूर समझता है। क्योंकि शोषको के प्रति उनके मन में घृणा है। वे उनकी संस्कृति से अपने को अलग समझते हैं। कवि मुक्तिबोध कहता है की केवल आर्थिक साम्यवाद नहीं आ सकता इसलिए समानता की धरातल पर उन शोषकों से अभिन्न है। वे अपने शब्दों में कहते हैं।

रेफ्रिजरेटरों, विटामिनों और रेडियोग्रामों के बाहर,
गलियों की दुनिया में
मेरी वह भुखी की बच्ची मुनिया है।
शुन्यों में पेट्रोल की आंतों में,
धुएँ की पीड़ा है,
छाती के कोषों में रहितों की क्रीड़ा है।

कवि मानता है की आज एक तरफ अमीरों के घर में सभी प्रकार की सुविधाएँ है और आम जनता भूख से व्याकुल है। एक और यह सभी सुविधाएं उपलब्ध है तो दूसरी ओर ऐसा समाज है जिनको खाने के लिए कुछ भी नहीं है। उनकी मॉ को खाना नहीं मिलता। इसलिए उनकी कोशों में से दूध भी नहीं निकलता वह छोटी बच्ची अपनी मॉ की छाती से लिपटकर दूध की जगह अपनी मां का खून चुसती है। यह बड़ी विदारक बात कवि अपने काव्य में व्यक्त करता है।

गहनत्तम अस्मिता का जागृत विवेक (पता नहीं)

मुक्तिबोध को सामान्य जनता के प्रति आस्था है उनके सुख–दुःख के साथ कई एकाकार होना चाहते हैं। उन्हें विश्वास है कि कही ना कहीं शोषित लोगों में भी गहन अस्मिता है और जब यह अस्मिता का विवेक जागृत होगा तब निश्चित ही वर्तमान दशा का स्वरूप कुछ अलग ही होगा। वह आशावादी है, उन्हें पता है कि संघर्ष का अंत होगा और यह व्यवस्था खत्म होगी। उस व्यवस्था के खत्म होने से समाज शांत हो जाएगा। चेतना की जो चिंगारी है वे इन लोगों के भीतर बैठी है और चिंगारी को अगर हवा दी जाए तो वह संघर्षरत हो जाएगी। कभी न कभी तो यह शोषकवाद खत्म हो जाएगा और सभी मानव अपने आप को सुखी कहलाएँगें यही कवि कहना चाहता है।

अपनी धक धक,
में दंदिले फैले फैलेपन की मिठास,
यानी स्वरूपात्मक विकास का युग,
जिसकी मानव गति को सुनकर,
तुम दौडोगें, प्रत्येक व्यक्ति के
चरण तले जनपथ बनकर।

कवि आशा करता है कि भविष्य में समाज के भीतर की ज्वाला एक दिन शांत हो जाएगी और इन पूँजीपति के प्रति ज्वाला शांत हो जाएगी तभी यह समाज सुख शांति से जी पाएगा। यही भावना कवि मुक्तिबोध अपने यथार्थ तथा वास्तविकता में मन ही मन आशा तथा उम्मीद करता है।

बुद्धिजीवी की मानसिकता (ब्रह्मराक्षस)

मुक्तिबोध ने वर्तमान कालीन समाज के मध्यम वर्ग की मानसिकता का चित्रण किया है। वर्तमान समय में बुद्धिजीवी को अपने आप पर अंहम है। आपने आपको वह बहुत ऊँचा समझता है। और यह उसकी प्रवृत्ति राक्षस प्रवृत्ति है। वर्तमान समय का बुद्धिजीवी अपने आप को आत्मानंद में किसी तरह पकड़ कर रखता है। वह अपने अंहम के कारण उस निर्जन स्थान पर निवास करता है। वह अं में खड़ा है इस ज्ञान का उपयोग वह व्यवहारओं में नहीं कर रहा है।

इसके पास इतना अंहम है और हम ज्ञान को अज्ञान बना देता है। वर्तमान समय का बुद्धिजीवी समाज उन्मुख होना चाहता है। लेकिन हो नहीं पाता क्योंकि आज वर्तमान में पूँजीपति रावण के रूप में नजर आते हैं। कवि अपने शब्दों में कहना चाहता है–

पिस गया भी भितरी,
औए बाहरी दो कठिन पाटो बीच,
ऐसी ट्रेजडी है नीच!!

शोषित जनता दो कठिन पाटों के बीच पीसी जा रही है और यह पूँजीपति रावण उनका खून चूस रहा है। यही विडंबना कवि करता है की भीतरी और बाहरी दो कठिन पाटों के बीच जब आम वर्ग, सर्वहारा वर्ग पिसा गया है। उसके भीतर की मानसिकता और बह्य परिवेश के बीच झूलता हुआ दिखाई दे रहा है।

असमन्वयक का भाव (एक अरूप शून्य के प्रति)

मुक्तिबोध ने उस आरोप के भाव की महानता का चित्रण किया है भगवान का रूप विराट है। यह मान्यता है कि कवि यह बताने का प्रयास कर रहा है कि यह अजीब सा है। इस धरती पर जो अन्याय अत्याचार घटित हो रहा है। क्या उसका पता उसे नहीं इस तरह से ही शोषक अपना असमन्वय सिद्ध करने के लिए उन जनता की भावना की अवहेलना करते हैं। यह सभी मूल्य या बातें धर्म के नाम पर यह लोग चलाते आ रहे हैं इसको अपने प्रति अभिमान होने का कारण ये दिन–ब–दिन जनता का शोषण ही करते आ रहे हैं। जनता के सुख–दुःख से उनको कोई लेना देना नहीं है।
उनकी गलतियॉ जो भी बताने की कोशिश करेगा वह मर जाएगा। इसलिए इस सफेद झूठ को हमारे सामने रखते है। जो बड़ा खुरदरा है। हमारी कृति और पेश इन सब को यह शोषक झूठ बताते हैं हमें मौलिकता के माध्यम से चुप कराया जाता है। हमारी आवाज को दबाया जाता है। क्योंकि उनके पास धन और सत्ता दोनों बातें मजबूत है। आम जनता के पास यह नहीं है। इसलिए सत्ता के प्रभाव में आकर जनता का शोषण करने का काम यह पूँजीपति व्यवस्था कर रही है।

पूंजीवादी सभ्यता का प्रतीक (चांद का मुंह टेढ़ा है)

कवि यहां पर पूँजीवादी सभ्यता का प्रतीक के रूप में आया है। यह पूँजीवादी लोग आम जनता का किस तरह से शोषण करते आए हैं। इस का चित्रण इस में मिलता है। पूँजीवादी लोग गरीब जनता का हर तरह से शोषण करते आए हैं। लेकिन यहॉ पर सामाजिक विषमता को नष्ट करने का प्रयास कलाकार और धनिक दोनों करते हैं। तत्व बोध को जागृत होता देख कर ही पूँजीवादी लोग उनके भावना को दबाने की कोशिश करते हैं

शायद, है जिंदगी की मंन की तस्वीरें
फिलहाल नहीं बना पाएंगे
अलबत्ता पोस्टर हम लगा जाएंगे

कवि कहते हैं हमारे कहीं वर्ग है और यह शोषित वर्ग पूँजीवादी की सहायता करते रहते है। तो क्रांति नहीं हो सकती कविता के अंत में दो लोग पोस्टर चिपका रहे हैं। दूसरे श्रम ए प्रिंटर है और एक तारागीत सृजन का प्रतीक है। दिल दिमाग और हाथ एक साथ नहीं आते तो क्रांति नहीं होगी। मजदूर कितना ही चिल्लाएँ तो क्रांति नहीं होगी। कदम–कदम एक हो जाए तो वह हथियार बन जाता है। और एकीकरण के साथ विषम जीवन मजदूर और पूँजीपतियों में ही बड़ा अंतर होता है। कवि कहना चाहता है कि हमारे यहां बुद्धिजीवी चमगधीधड के जैसे हैं, वटवाघुल के जैसे हैं यह उल्टे लटकते हैं। हमारे पैसे से पलते हैं। हम सम्मान देते हैं। यह हमारे बुद्धिजीवी आम लोगों का शोषण करते हैं। अपने आप को बड़ा साबित करते हैं। बुद्धिजीवी और आम आदमी एक नहीं हूएँ इसलिए यहॉ क्रांति नहीं होती। हमारे यहॉ बुद्धिजीवी अंधेरे में बैठकर सोचते हैं। कुर्सी पर बैठ कर बात करते हैं। जैसे मैं बुद्धिजीवी हुँ। उसी तरह राजनीतिक लोग है। यह पुत्रों पर बैठे घु–घु है। यह उल्लू निशाचर होते हैं। इसी तरह राजनीतिक लोग हैं। शहर में दो पुतले हैं गांधी और तिलक का। गांधी शांति वादी है, तिलक उग्रवादी है। इन दोनों ने आजादी के लिए प्रयास किए हैं। तिलक के ऊपर बैठे घु–घु लाभ उठा रहे हैं। गांधी के विचारों से प्रेरित है। यह राजनीतिक कर रहे हैं।

संदर्भ सूचि

1. गजानन माधव मुक्तिबोध की संपादित कविताएँ
2. गजानन माधव मुक्तिबोध, चॉद का मुह टेढा, ज्ञानपीठ प्रकाशन, नई दिल्ली
3. नेंमीचंद जैन, मुक्तिबोध रचनावली, भाग 1 राजकमल प्रकाशन
4. मुक्तिबोध के काव्य में जन चेतना, डॉ माधव सोनटके के मौखिक रूप से
5. मुक्तिबोध काव्य की भाषा और शिल्प, अनहद कृति मार्च 201